॥श्रीगणपतयेनमः अथराजनीतराकवीत्तदेवीदासकृतलिष्यते नीतहीतेधरमधर
मतेसकलसिधनीतहीतेआदरसभामेपाइये नीतहीतेनीतबूडेनीतहीतेसुषउपजेनीत
हीतेबोलिबेलोबकतामहाइये नीतहीतेराजराजेनीतहीतेपातसाहीनीतहीकोनउपक
माहिजसुगाइये छोटेनुकोवडेकरेवडेमहावडेकरेतातेसबहीकुराजनीतहीसुनाइये
१ कोनयहदेसकोनकालकोनवेरीमेराकोनमेरोहितमोहिदिढेतनटारिबे केतीआयप
टकेतोषरचकितोकबलुतिहीजनमानमोहिमुषतेनिकारिबे संपतकीआवनकोकोपनमे
रेअविरोधनाहीकोउपावयहदाबउरधारिबे राजनीतराजनकोदिनप्रतेदेवीदासच्यारिघरी
रातरहेइतनीविचारिबे २ छोटेछोटेगुननकोसुरनकीवारकरेपातरेसेपोषपानीपोषक
रिपारिबे फुलीफुलवादनकेफुलमोहिलवेषरेघनेदरषतएकठोरतेउषारिबे नेनेपरेपाइ
नितेटेकदेदेऊचेकरेऊचेबढगएतेऊरकाटिडारिबे राजनकुमालीनकुदिनप्रतदेवीदास
च्यारिघरीरातिरहेइतनीविचारबे ३ आरंभतजाहिबडलोगनसुवेरहोयइसरेकरतजा
हिभ्रमबहरेनही करतकरतजाहिउपडेकुलेसबकुफलजेसेसाजागेजाछुपेटइजेरनही
अतिछोटोकांस... देवीदासजामे

॥श्रीगणेशाय नमः॥

लोभपरचबराबरही बुद्धिवानह्कै ऐसो कारज करैनही ४ एककेबोलबोलतोतेहछ
केसेमोलकोकीएकहीकैंअविचारनिसमतहै कहीकीरहीतोनजेनरहीतोअतिनखेत्रे
सेतामनुष्यमैहौकोनजानेकेतहै सांचसिरलियेविरखेसरलदेवीदासरेनदिनांआत्मे
अ विचारमैंवनेतहुंयाहीतेवकेपुरषबोलेवकीवरक्यांसुबोलकाजबोलतापुरषजांनदेतहै
५ हंसेपरसांपराषेसापपरमोरराषेबेलपरसिंघराषेवाकेकहाजीतहै पुतनकेसुत
राषेनूतकोविन्हुतराषेवमुषकोगऊमुषयहेवमीरीतहै कांमपरवांमराषेविषकेअ
मृतराषेआगपरपानीराषेसोइहुडागडीतहै देवीदासदेषोपानीसंकरकीसांवधांनी
सबैवातवायकपेराषेराजनीतहै ६ तनकेसोतिनमैंबिनकीमांझवातफिरैहै केरिमुंच
फकरेवारवारवनीये कोनमांझवाखकसौबिलपांमकुचबेठेदावपरऊदराहिचूकैनही
हनीये ऊसीदहसुवेदंकारीडयांकीफिरसोंहीहोयनूलीयेनकोकोतोबोम्लतेनवनीये
वसुधाकेबीचिंऊविडायचाहैंतोंऊवीरवेसुंदरवरमाथकोटोनहींगनीये ७ कीरतकोमूल
एकारेनदीनोदानदेवोधरमकोमूलएकसाचयदहिचानवो वदिवेकोमूलएकऊचोमनरा
षिवोहेजानवेको [illegible] जहांमोदेवी

पछितसविचा नसमेतहे

य
धि
ज

निवाइकी ओसरवारहजा [illegible] कोडाइतहवारमहाप्रज्ञमनलाइ
की नखीइकनायकीहै छाजकोनहा मीपाखुरीबकुनाइकीतेनीकीनिरनाज
की १२ दानवकोमांसमदुलेकेमधुसूदननेमदनीवनाइ असेवेदनमेगायोहै अे
सीयाधिनाइ धिइनेकेतुंजवहै नृपवजसमेंसुवामबाइतोहीममनलायोहै नृपति
केहाइजाहिदेषतही देवीदासतीनकूटजाइसाईमाईभूतजायोहै अरिकेहथपार
नीचीनारनिकीदीनदुपसाहिबको सोइपरमेसरबनायोहै १३ द्रुहनुपजोअजा
प्रजाहि मारपायेताकोपकवारही तो त्रपति निंदीनहै बुधिवानकैकेपर नाम
जुविचारचितअजाप्रजावीरसैतेजानतसुजानहै आमषतेहधसोअपावेके कु
वारताते राजानिकोपारिवेअआअजासमानहै १४ दोलतमिवाइतासौ लपवेहै ११ किी
जोगताते दोलतकीमांषीतिनेंकहांखुजआवेगो एतीतीकुथोरीयाकोमकूरकहा
वेयामेवांटेहैसबकोवंटसारूतांकिपाविगो मायायहकालपौकैमिसरीकोकू
जानेहि वांटिकोनिपावेगोसोजनोइकहावेगो देवीदासयाहिबिनुनाटपायोबाहेसु
तोदांतनिनुरावेगोके [illegible] १५ यारतंगमानकेदारदीकेसवेधरकुय

औरैस्अनुसेरैस्ऐतेहह औरहे पां [illegible] तेसंसारीगनेनपांचेराऊछे अपनता
केसुमसिरमोरहे गनिकाऊरूपनवानंद्धेफकारीघरबांधिकेसथिरनयोरातदिनऊरहे ऊग
मेऊोवसीयेतोहसीयेनकोऊदेवीहस्योहीऊोचाहेतोएहसीवेकीगोरहे १६ मंगाजीये चतुरंग
चमूगढकोटआवासमवेविधिजोऊ कोमनिवासहथ्यारतरहुऊकायसूरमेघाटनकोऊ
आयपरेत्तहीनीरउपद्रवजोत्रोंवयारिवलीतरबोऊ तोजगिरूलकोपाथरकोसुपहारुपल
रुवराबरदोऊ १७ ऊऊत्तसुद्धसचिक्कनसुंदरचंचलहोयनहीफुरनिरूपर बोऊलहोश्रो
रुलोथलकोसबहीकीसहेहेंसरहेमनुरूपर आयपरेऊजगीसबुरीसोइलेहेचढाइसबे
मीरऊपर एककवित्तकहेदेवीदासविचारऊथेलप्रधानऊरूपर १८ औसरसुंसनीश्री
श्रीदबिताकीछबिलीये ऊक्तिसुंऊटीहेऊाके आभवदातहें: साचसुंसजीहेमनहरिसो
मिलीविचारपरनामनीकीतीवीस्वोतानअधातहे आभरनियेरीओरुअर्थलरिमहावरुीओर
कोहिलहेऊाकेसुनेइमऊातहे वेदकीसीवांनीवातसोईवातकहावतदेवीदासओरवातवा
तनकीवातहे १९ सरदकीचांदनीसेऊजेरआमोजसुनसुंदरसुहततेदुराएदुरवेकेहे वेफे
गुनवंतदेवीदासमनमोहिलपानमोहरतसदारदरवेकेहे काहूपककरकीकुराइकरी

नको विरहु सो पैड़ा की दीपरि है देवीदास ऐसे बड़े वारे है जो बार होइ के होंधो विचार जाको वेरीक
होकरि है २८ विनु कहे सब जानें साउ सिरपे मानें साहिब की नीर जानें मन लाइयतु है दुष सुष की
ने आदि यारी ही रहै अघाने धनी का जो प्रान देइ तेइ गायी तु है निकसम मेक सराषे फल में निकर होय जो
जो मोन लपेटे रहै वे विछाइयतु है घरी घरी अरजीन होय बरजीन करे ऐसे चाकर तो स्त्रैगु निपायी
यतु है २९ प्रान सम राषे ताको सुष अनिलाषे आवे वेन जो षसदा दे तो सराहिये चित हित
पागि कहे काहू के न लोगपरि परे नीर जो मोछो डुबन न जर बाहिये वारवार ले वेत कमीरहू सो रहे
है दोष लावत न रूठे दुषपरे ते निवाहिये कृतज्ञ अति प्रीति औ प्रतीत एक रस ऐसे चाकर को दे
वीदास ऐसे प्रभु चाहिये ३० सदाचार लीन सब बात में प्रवीन पाये अनपाये अनयाये पीन हीन
के बहू न जाग्यो है ऊलके ऊलीन कपटीन अनसीन कि तदेवीदास लोक परलोक अलि जा
ग्यो है ऐसे स्त्रेरपुन्य निमिलि है जाहि चकरे जो साके रमे सुर लोक वेद यह जाग्यो है माहि
बकि ताकदे है के तो सन मानके है मानें के वद लेजन प्रान करि राग्यो है ३१ वात वात ऊपर षु
मामद करत है जो मुहपरि पीठ पाछे चवाइनि कोपारो संपति के साथी स्यार मक सूदी वेहूस्या
रले वेजे ऊ स्यार ऐसे चाकर कु वापरो कोन मानें एक लोक सजानें जो मरु में अरजठां

नेतिनविनाहीसरो देवीदाससरिपेटसेवकनिवीचसोश्रेयेतिश्रछफोतसिवाइदेविदाकरो
॥२ हुबेरसेश्रावेन्हेकोमकुंकिलकिलोवेजितहीलगावेहमझोईकरेसोकहे साहिबने
न्हेकोनहुरबलकीदशाश्रांनमेलिदीएमालनपरकहूं श्रोकहे डाहांमुंहघाल्योतहांगि
लगएसरवंसमांतिगएलमांहिकोनसुनेकोकहे फेरिकुहिलीजेतनकोम श्रावेदेवी
दासकहीयोविचारएधंचाकरकिझोकहे ॥२२ हितकारीककेदसेदाससनिडसाहि
बसुंहितकीनकहे तोहिरपतेमेपामीहे येसेसतासदकीसुबुधिनिहदकीझोसनेनही
देवीदाससोतोसटमांमीहे मंत्रीहोइहितकीकहीयाकी श्रोराझोहोयमारकोगहीबातो
तोझोरावहनांमीहे नांतरटपतिहेविपतहीकोकोमी श्रोरमंत्रीवहनिहचेनरकेही
कोगांमीहे ॥२४ वातनिवहानिहारवितकेलहनहारश्रंतरमेकारेश्रोरउपरारेगोरहे
श्रानीयोननहीथोरेदिनकेहरनहारदेकरिकुमंत्रस्वामीसंकटमेबोरहे नाहनश्रनीत
केसहनहारहमतेरीपोरकेरहनहारबातनहेगोरहे सझानिकेचितकोहनहीरधंनेध
रेदेवीदासहितकेकहनहारथोरहे ॥२५ एकुपावपेटसोंलगाइलीनोलपटानेहूजे
पावगाढोमुखमहामोनुदेगाले नारहिंनवाईइकगोरीकरिमेछिबेचिपीवमेदुराइरो।

५

घ्रतसेगे गउमुत्रगोबरगोटोगरुणी [illegible] सकिवंमुचकरदीया: श्रापकवकहेश्रे
नाउतम [illegible]

बेमारवारमांहि जो हि घटे वधे नांहि यहै निहचै मैं धरि ले देवीदास कहै को हू सो न हार
माइ कहै मन मैं संतोष परंन दिनां अनुसरि ले वापी सरै सरिता भरै है सात सागर पेट तो ते
रे वासन समान पानी भरि ले ७७ पूरे कुल जनम निरोग देह सरीर घर बिन व बिधा लेसु
रसु रीति रीषामु है साह सी सपूत सुषदाइ कूकुटंब घर पतिव्रता नारि यह इते मन को सु
हे रामूह कीनाम तिसगति दिनंद वे ही कौ लाकर कुकम कारी जाको जस नां मुहै देवी
दास ए ते गुन पाइये जगत मै तो सुन सान मुकति कुहुर ते परनां मुहै ७८ गौर कुल जौ
न मकुरै रवास देवीदास रोग सरीर छिनदुष सुंजर तु है दुषदाता इत धन कौ
रमाक लहि मानकरके सो नारि नेनंद पतजर तु है पराधीन जीवन ऐसौ जस लोक
पूररहयो मररंष के हरि दो कहत तापर तु है ऐसे कौ जनम दैषे जसम मांझ मेरे जान जम
के नरक वासी सांहि दी कर तु है ७९ लोग केसु जान कहै बतीसुक पढी कहै सु बि
सो कहत यह जैसो दंज लीनो है सूर सुनि तुर कहै मृदु बोले दीन कहै वकता सुवात
नि मुष रदो षदी मो है कामल सु कहै मति हीन अभावंत सु कहै तऐ समरथ यरु के सो
नय जी नो है देवीदास कहै ऐसो कौन है जु इन सब दुजनन निकै ऐसे कतिन कीनो